WLC15-2-2 HI

यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने कई केस - प्रोग्राम 2

अनाऊंसर: आज द जॉन एन्करबर्ग शो में, यीशु खुद क्या है ये समझता था, क्या ये सच है कि आज के विद्वानों ने इस बात को माना और स्वीकार किया है कि यीशु ने खुद को इस्राएल का मसीहा और परमेश्वर का अद्भुत पुत्र बताने का दावा किया है/

अनाऊंसर: आज मेरे मेहमान हैं जो आज हमें बताएगे, फिलोसोफर डॉ. विलियम लैंक्रेग, इन्होने फिलोसोफी में पी एच डी की है, बिरमिंगहैम यूनिवर्सिटी इंग्लॅण्ड से, आज द जॉन एन्करबर्ग शो में हमारे साथ जुड़ जाए/

****

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: प्रोग्राम में स्वागत है, मैं हूँ जॉन एन्करबर्ग, आज मेरे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद, आज हमारे पास आपके लिए महान प्रोग्राम है, मेरे मेहमान हैं डॉ. विलियम लैंक्रेग, ये हमारे समय के विख्यात फिलोसोफर हैं, और ये बहुत ही विख्यात दोष निकालनेवालों के साथ विवाद में बने रहे हैं, पुरे संसार की यूनिवर्सिटीज से, और डॉ. क्रेग मैं बहुत खुश हूँ कि आज आप हमारे साथ हैं/

और ये इतना महत्वपूर्ण विषय है, हम चर्चा कर रहे हैं कि यीशु कौन है? और क्या हम सच में कह सकते हैं कि यीशु ने सच में कहा है, वो बातें जो उसके बारे में सुसमाचार में बताए गए हैं/ हमने पिछले हफ्ते इसे शुरू किया, हमने देखा नए नियम के सुसमाचार के ऐतिहासिक सबूत पर, ये यीशु के बारे में शुरू के स्रोत हैं, और हमें उस पर क्यों भरोसा करना चाहिए, आप इसके बार एमे सारांश में बताइए और फिर आगे बढकर देखेगे कि क्या यीशु ने मसीहा होने का दावा किया? क्या यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है? क्या यीशु ने मनुष्य

का पुत्र होने का दावा किया है? इन शब्दों का क्या अर्थ है? हम कैसे जाने कि उसने सच में कहा? तो चलिए शुरू करते हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: हमारे पिछले प्रोग्राम में सटीक होने के कुछ क्रायटेरिया हमने देखे थे, जिसका उपयोग ऐतिहासिक विद्वान करते हैं, यीशु के बारे में जांचते हुए/ और ये क्रायटेरिया हमें योग्य बनाते हैं, जो ऐतिहासिक मूल्य बढाता है किसी घटना का या कहने का, खासकर यीशु के बारे में कहा गया हो, जैसे कि ऐतिहासिक फिट, एम्बेरेस्मेंट, असमानता, शुरू के अलग अलग स्रोत, और ये सब/ और हम इसका उपयोग करने लगते हैं, इस कहने पर, यीशु के जीवन के बारे में कि उसने खुद को यहूदी मसीहा कहा है/ और हमने उसके जवाब में देखा कि युहन्ना बप्तिस्मादाता जेल में था, और यीशु युहन्ना को जवाब देता है, उन खास चिन्हों में जो पहली सदी के यहूदी विश्वास करते थे कि मसीहा उसके आने पर यही करेगा, जैसे हम कुमरान समूह से डेड सी स्क्रोल्स में देखते हैं/

और इसके साथ ही एक और चकित करनेवाली बात है, यहाँ यीशु के बारे में मैं सोचता हूँ ये अद्भुत है/ और साथ ही ये लागू होती है उसके मसीहा के स्थर पर, जैसे वो इस्राएल का राजा था, लूका 22 में, यीशु अपने 12 चेलों से कहता है, जिन्हें उसने चुना था, उसने कहा नई सृष्टि में जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे, यीशु ने 12 प्रेरितों को चुना था, अपने चेलों के रूप में, और यहाँ ये कहता है, कि वो 12 सिंहासन पर बैठेगे, और इस्राएल के 12 गोत्रों का न्याय करेगे/

अब ये तो ऐतिहासिक यीशु की ओर से कही गई बात है/ क्योंकि शुरू का चर्च जानता था कि अब 12 चेलें नही रहे, यहूदा ने धोका दिया और उसने आत्महत्या कर ली थी, याने इस्राएल के 12 सिंहासन पर बैठने के लिए 12 चेले नही थे/ तो ये इसे इस तरह बताता है कि ये इस तरह से कहना है जो स्वयं यीशु के पास जाता है/

अब यदि हर चेला 12 में से हर एक सिंहासन पर बैठेगा, इस्राएल के 12 गोत्रों का न्याय करने के लिए, तो फिर इस्राएल के ऊपर खुद कौन होगा? पुरे इस्राएल के ऊपर कैन होगा? यीशु खुद 12 में से किसी एक गोत्र के निचे नही हो सकता था, उस 1 सिंहासन के निचे नही जिस पर चेला बैठा हो, उसे तो इस्राएल का राजा होना था जो चेले के न्याय करने के ऊपर बैठना था, जो इस्राएल के 12 गोत्रों का न्याय करेगे, और यही उसका अर्थ था जब उसने कहा, कि मनुष्य का पुत्र अपने महिमामय सिंहासन पर बैठेगा, दूसरे शब्द में वो खुद के बारे में सोचता है, इस्राएल के राजा के रूप में, जो प्रतिज्ञा किया मसीहा है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: और बिल मैं सोचता हूँ कि लोगों को हमें ये बताना होगा कि ये यीशु के अद्भुत दावे हैं, इस तरह से कि कोई साधारण मनुष्य ऐसे दावे नही करेगा/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही जॉन, ये दिखाता है कि यीशु खुद के बारे में इस तरह से नही सोचता था, कि कोई सामान्य रब्बी हो, या यहूदी पवित्र व्यक्ति, या यहूदी शिक्षक हो, उसने सोचा कि वो असाधारण है, जिसे परमेश्वर ने अलग किया है, वो बहुत समय से प्रतिज्ञा किया गया दाऊद के घराने का राजा था, वो मसीहा जिसे परमेश्वर अपने राज्य में इस पृथ्वी पर स्थापित करेगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: बिल, बहुत से वाक्य जो यीशु ने मसीहा होने के बारे में दावे किए हैं, शायद इसके बारे में सबसे स्पष्ट वाक्य तो वो पट्टी होगी जो उसके क्रूस पर लटकाई गई थी, रोमी अधिकारियों ने, इसके बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही, यीशु ने केवल मसीहा होने का दावा ही नही किया, लेकिन उसने जो किया मैं सोचता हूँ कि वो भी सबूत है उसके मसीहा होने के स्थर का/ यहूदियों के राजा के रूप में क्रूस पर चढाए हुए, ये शब्द तो उसके क्रूस के ऊपर पट्टिया पर लिखकर लगाए गए थे, ये दिखाता है कि यीशु मसीहा को दिखानेवाले के रूप में क्रूस पर चढाया गया/ उसने खुद के बारे में सोचा कि वो इस्राएल का प्रतिज्ञा का राजा है/ हम जानते हैं कि ये ऐतिहासिक है क्योंकि ये वाक्य था, यहूदियों का राजा, इसे कभी बाद के मसीही चर्च ने यीशु के बारे में उपयोग नही किया/ ये शीर्षक नही है, जो यीशु के लिए शुरू के मसीही चलन में उपयोग किया गया हो/ और ना ही ये ऐसा शीर्षक था जिसे यहूदियों ने उपयोग किया होगा, यीशु के बारे में, उन्होंने तो उसके मसीहा के स्थर का इनकार किया था, ये तो केवल यीशु को मारने के लिए रोमी अधिकारी के लिए था, ये सच में ऐसी पटिया थी, जो उसके क्रूस पर लटकाई गई, ये फिर से दिखाता है कि यीशु क्रूस पर चढाया गया, मसीहा को दिखानेवाले के रूप में और इस तरह वो मसीहा होने की सचेतता के बारे में बताता है/

हमें खुद को ये बात दिलानी चाहिए जैसे हमने पिछले प्रोग्राम में चर्चा की है, कि शुरू के मसीही चर्च ने विश्वास किया कि यीशु ही मसीहा है, इस सच्चाई के बावजूद कि वो उसके जैसे नही दिखता था, जैसे मसीहा को होना चाहिए था,मसीहा को इस्राएल का राजा होना था, जो इस्राएल के शत्रु को दूर करेगा, और इस केस में वो तो रोम था, और दाऊद के सिंहासन को फिर से स्थापित करेगा, यरूशलेम में, जहाँ वो यहूदी और अन्यजाती को एक समान घोषित करेगा/ उसे तो ऐसे ही अचानक किसी अपराधी के रूप में क्रूस पर चढाया जाना नही था/

और फिर भी शुरू के मसीही चर्च ने, इसके बावजूद विश्वास किया कि यीशु ही मसीहा है, उसने ये दावे नही किए होगे, खुद के बारे में, शुरू के चेलों ने ये विश्वास किया कि वो दावे उसके क्रुसिकरण के बावजूद क्योंकि मुर्दों में से उसके जी उठने के कारण/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, अगले प्रोग्राम में हम पुनरुत्थान के बारे में पूरी तरह से देखेगे, लेकिन चलिए आगे देखते हैं, क्या यीशु ने कभी कहा कि वो परमेश्वर का पुत्र है? हम कैसे जान सकते हैं कि जब वो ये कह रहा था तो उसका क्या अर्थ था?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मैं सोचता हूँ कि यीशु नासरी ने खुद परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया, एक अद्भुत तरीके से, जो उसे अलग करता है यहूदी राजाओं से, पवित्र लोगों से, और बाकि चेलों से, और ये सबूत पाया जाता है उसके दाख की बारी के दुष्ट किरायदार के दृष्टांत में जो मरकुस 12 में पाया जाता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: चलिए मैं इसे पढ़ता हूँ और इसे स्क्रीन पर रखते हैं कि लोग इसे समझ सके/ फिर वह दृष्टान्तों में उनसे बातें करने लगा किसी मनुष्य ने दाख की बारी लगाई और उसके चारों ओर बाढ़ा बांधा और रस का कुण्ड खोदा, और गुम्मट बनाया और किसानों को उसका ठेका देकर परदेस चला गया, फिर फल के मौसम में, उसने किसानों के पास एक दास को भेजा कि किसानों से दाख की बारी के फलों का भाग ले, पर उन्होंने उसे पकडकर पीटा और छूछे हाथ लौटा दिया, फिर उसने एक और दास को उनके पास भेजा, उन्होंने उसका सिर फोड़ डाला और उसका अपमान किया/ फिर उसने एक और को भेजा उन्होंने उसे मार डाला, तब उसने और बहुतों को भेजा, उनमे से उन्होंने कुछ को पीटा और कुछ को मार डाला/ अब एक ही रह गया था जो उसका प्रिय पुत्र था, अंत में उसने उसे भी उनके पास यह सोचकर भेजा कि वे मेरे पुत्र का आदर करेगे, पर उन किसानों ने आपस में कहा, यही तो वारिस है आओ, हम इसे मार डाले, तब मीरास हमारी हो जाएगी,और उन्होंने उसे पकडकर मार डाला, और दाख की बारी से बाहर फ़ेंक दिया/ फिर वो आगे कहता है, वो जो यहूदी अगुवे सुन रहे थे, जो उसे मारना चाहते थे, क्योंकि वो जानते थे कि वो उनके बारे में कह रहा है/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बिलकुल सही/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: इसे बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये किराएदार तो यीशु के समय के यहूदी धार्मिक अगुवे थे, दाख की बारी का मालिक परमेश्वर है, वो दास जो परमेश्वर ने भेजे थे, उन दाख की बारी में कि फल लेकर आए, ये वो अगल अगल भविष्यवक्ता हैं जो परमेश्वर ने समय समय पर इस्राएल में भेजे थे, और उन्होंने भविष्यवक्ताओं को पीटा, उन्होंने उसे मारा, उनसे बुरा व्यवहार किया, उसकी आज्ञा नही मानी, अंत में परमेश्वर के पास एक ही पुत्र बाकी था, मेरा एकलौता प्रिय पुत्र, वो मेरे प्रिय पुत्र की सुनेगे, उसने कहा लेकिन उन्होंने पुत्र को मार दिया, क्योंकि वो तो दाख की बारी का वारिस है, अब ये हमें क्या बताता है यीशु ने खुद के बारे में क्या समझा, उसने खुद के बारे में सोचा, कि वो परमेश्वर का एकलौता पुत्र है, जो सब भविष्यवक्ताओ से अलग है, जो उसके पहले आए थे, और यहाँ तक कि इस्राएल का वारिस खुद भी यहाँ तक कि दोष निकालनेवाले इस दृष्टांत की सटीकता को मानते हैं, क्योंकि ये थोमा के अतिरिक्त बाइबल के सुसमाचार में भी पाया जाता है/ और इस दृष्टांत में हम स्पष्ट सबूत देखते हैं कि यीशु सचेत है कि वो परमेश्वर का एकलौता पुत्र है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: बिल यीशु का खुद के बारे में इस तरह विचार था कि वो परमेश्वर का पुत्र है/ यहाँ इसके बारे में बताया है मत्ती अध्याय 11 वचन 27 में, इस वचन में क्या है, इसे पढ़ते हैं/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मत्ती 11:27 में यीशु ने कहा, "मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नही जानता, केवल पिता और कोई पिता को नही जानता, केवल पुत्र/ और वह जिस पर पुत्र उसे प्रकट करना चाहे/ अब बहुत अच्छा कारण है कि ये सोचे कि ये एक एतिहासिक यीशु के बारे में एक बात है/ सबसे पहले ये तो सबसे पुराने स्रोत से लिया गया है, जो मत्ती और लूका द्वारा बताया गया है/ जब वो सुसमाचार लिखते हैं, और साथ ही ये ऐसा नही जो पहले चर्च ने बनाया हो, क्योंकि ये है कि पुत्र को नही जान सकते हैं, कोई पुत्र को नही जानता, केवल पिता/ लेकिन ईस्टर के बाद के चर्च, हम पुत्र को जान सकते हैं, हम जानते हैं कि मसीह हमारा उद्धारक है, तो ये नही हो सकता कि बहुत बाद में खोजा गया, एतिहासिक यीशु के बारे में, इसके साथ ये हमने क्या बताता है, ये बताता है कि यीशु ने खुद ही कहा कि वो परमेश्वर का एक मात्र पुत्र है/ और अद्भुत प्रकाशन है पिता परमेश्वर का, मनुष्य जाती पर/ ये तो सच में अद्भुत दावा है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, चलिए अगले में चलते हैं, और वो है मरकुस 13:32, यीशु अपने दूसरे आगमन के समय के बारे में बताता है/ वो कहता है कि उस दिन और उस घड़ी के विषय कोई नही जानता, न स्वर्गदूत, और न पुत्र/ परन्तु केवल पिता/ इसके बारे में बताइए/

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: फिर से, ये एतिहासिक यीशु के बारे में मजबूत रूप में कहना होगा/ क्योंकि बाद के मसीही चर्च ने ये विश्वास किया कि यीशु आलौकिक है, उन्होंने कभी भी इसे ऐसे ही अनजाने में नही कहा, यीशु के बारे में, लेकिन यहाँ यीशु कहता है कि उसको पता नही, उसके दुसरे आगमन का समय/ ये इस तरह दिखता है कि ये ऐतिहासिक यीशु का शव्द है, लेकिन यीशु क्या कहता है इस बात में, वो खुद के बारे में कहता है कि वो परमेश्वर का पुत्र है, और ये बढनेवाले क्रम में होता है, मनुष्य से, स्वर्गदूत, फिर पुत्र है और फिर पिता है/ ये ऐसा क्रम है जिसमे यीशु हर मनुष्य और हर स्वर्गदूत को रखता है/ सबसे उपर में पिता है और ये सच में चकित करनेवाला दावा है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है बिल, सारांश में बताइए हम अभी कहाँ हैं?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: खैर हमने परखा है ऐतिहासिक यीशु की कुछ बातों और कामों को, चाहे हम कहे कि वो खुद के बारे में क्या समझता था, वो कौन है, और हमने देखा है सबसे पहले,कि ऐतिहासिक यीशु ने सोचा कि वो बहुत से समय से राह देखा गया मसीहा है, यहूदी राजा है जो परमेश्वर के राज्य को इस्राएल में स्थापित करेगा, दूसरी बात हमने देखी है, कि यीशु ने खुद के बारे में सोचा, परमेश्वर के पुत्र के रूप में, अद्भुत तरीके से, जो उसे अलग करता है यहूदी राजा से, और पवित्र लोगों से, ये पिता परमेश्वर का मनुष्य के लिए एक मात्र प्रकाशन था/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: फिर उसने खुद के बारे में इस शीर्षक का उपयोग किया/ मनुष्य का पुत्र और सुसमाचार में इसे 82 बार उपयोग किया गया है/ उसके पहले या बाद में किसी ने ऐसे नही कहा, हमें बताइए कि उसका क्या अर्थ था?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: बहुत से ले मैन, मनुष्य का पुत्र ये शीर्षक समझ सकते हैं, कि यीशु अपने मनुष्य होने के बारे में कहता है, उसी तरह से, जिस तरह से उसने परमेश्वर का पुत्र ये शीर्षक उपयोग किया/ जो उसके ईश्वरत्व के बारे में बताता है/ लेकिन सच में इसका उलटा भी सही है, जॉन/

यीशु ने खुद के बारे में मनुष्य का एक पुत्र कभी नही कहा, जैसे भविष्यवक्ता यहेजकेल अपने मनुष्य होने को दर्शाता है/ वो हमेशा डेफिनेट आर्टिकल उपयोग करता है, मनुष्य का एक मात्र पुत्र/ जैसे आपने कहा है कि ये यीशु ने खुद के बारे में सुसमाचार में कहा है, लेकिन उसका कभी उपयोग नही हुआ केवल प्रेरितों के काम में एक बार छोड़कर, सुसमाचार से बाहर नही आया था/ ये फिर से दिखाता है कि ये बाद के मसीही चर्च की खोज नही है, वो यीशु को मनुष्य के पुत्र के रूप में नही बताते हैं, यीशु ने खुद के बारे में इसी तरह से कहा/

अब इस डेफिनेट आर्टिकल का उपयोग करते हुए देखिए यीशु किस से बातें कर रहा था, इस संबन्ध में चलिए दानिएल के 7 वे अध्याय में देखते हैं, जहाँ दानिएल रात के समय एक दर्शन देखता है, और उसमे एक आलौकिक रूप को देखता है और कहता है कि वो मनुष्य के पुत्र के जैसे था/ जो निचे आता है, परमेश्वर के सामने आता है/ परमेश्वर के सिंहासन के समाने, और परमेश्वर उसे सारा न्याय और अधिकार देता है, कि पृथ्वी के सब लोग उसकी आराधना करे, और उसकी सेवा करे, और ये तो इस तरह का रूप था, जो दानिएल 7 के चित्र में है, इस कारण यीशु खुद को मनुष्य का पुत्र कहता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ये कुछ वाक्य तो अद्भुत है, बिल, लेकिन सुसमाचार हम ये भी देखते हैं कि यीशु ने लकवे के मारे को चंगा किया, और जब वो ऐसे कर रहा था, उसने कहा इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र के पास पृथ्वी पर अधिकार है कि पापों को क्षमा करे, उसने इससे कहा जो चल नही सकता था, कहा उठ, तो वो उठा, और उन सबके सामने चलने लगा, ये क्या दिखाता है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: एक बार फिर यही शीर्षक मुख्य बात है, मनुष्य का पुत्र, और वो अधिकार जो मनुष्य के पुत्र को स्वयं परमेश्वर ने दिया है, कि इस पृथ्वी पर इस तरह का न्याय लेकर आए/ और यीशु के अधिकार का स्पष्ट प्रकटीकरण, आलौकिक मनुष्य के पुत्र के रूप में, वो तो पाप क्षमा करने की योग्यता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, और वहां सुननेवाले लोग कह रहे थे, तुम खुद को परमेश्वर समझते हो, क्योंकि परमेश्वर को छोड़ कौन पाप क्षमा कर सकता है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: परमेश्वर को छोड़/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: याने ये अद्भुत सबूत है, अब चलिए उस शीर्षक में चले जो इ न सबको एक साथ जोड़ता है, कि यीशु ने कहा कि वो मसीहा है, वो परमेश्वर का पुत्र है और वो मनुष्य का पुत्र है/ यहाँ हम उसके परखे जाने को देखते हैं, जहाँ यहूदी अगुवे खासकर उससे सवाल पूछते हैं, और हमें बताइए कि ये क्या है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: ये परखे जाने की बात, यहूदी सेन्हीडरन या सुप्रीम कोर्ट, ये अद्भुत है क्योंकि ये सब तीन शीर्षक जिस पर हमने चर्चा की है वो सब इस एक चित्र में आते हैं, चलिए इसे पढ़ते हैं, हमारे दर्शकों के लिए, महायाजक ने उससे पूछा,क्या तू मसीहा है, उस परमधन्य का पुत्र? और यीशु ने कहा मैं हूँ/ और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे/ यहाँ यीशु दावा करता है कि वो मसीहा है, परमेश्वर का पुत्र और मनुष्य का पुत्र, और दानिएल 7 से कोट करता है, जो सर्वशक्तिमान के दाहिने बैठा है और आकाश के बादलों के साथ आएगा/ ये सब तीनों शीर्षक एक अदभुत चित्र में आते हैं, महायाजक ने क्या किया/ महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन है? तुमने यह निन्दा सुनी, तुम्हारी राय क्या है? और उन सब ने उसे दोषी ठहराया, मृत्यु दण्ड के लिए/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: जी, निन्दा करना, अब बात तो ये है कि उसने ये सब वाक्य कहे, और वो क्रूस पर चढ़ाया गया, जो इस सच्चाई के बारे में बताता है कि क्यों शुरू के चर्च ने उसकी आराधना की और उसे परमेश्वर कहा, उसके क्रुसिकरण के बाद, अगले हफ्ते हम इसे पूरी तरह देखेगे लेकिन इसे बताइए कि इसके बाद एक मुख्य बात क्या आती है?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: इसके बाद मुख्य बात आती है यीशु का पुनरुत्थान, यीशु का क्रुसिकरण, एक बड़ी विपदा थी, इन शुरू के चेलों के लिए, इसलिए नही कि उनका प्यारा शिक्षक अब मर गया, चला गया, लेकिन इसके बजाए क्रुसिकरण ने एक सवाल उठाया था, हर एक बात के पीछे/ जो उसने खुद के बारे में दावा किया और उन्हें बताया था/ मसीहा को तो यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन को स्थापित करना था, रोमी सताव को पूरी तरह दूर करना था, और यहूदी और अन्यजाती को फिर जोड़ना था, और परमेश्वर के राज्य में राज्य और अधिकार करे यरूशलेम से/ इसके बजाए यीशु ने, उसके पहले आनेवाले बहुत से मसीहा को दर्शानेवाले जैसे, वो रोमी लोगों के हाथो मारे गए, सामान्य अपराधी के रूप में, हार गए और सबके सामने शर्मसार हुए, तो इस संसार में, वो कैसे मसीहा हो सकता है/याने क्रुसिकरण तो पूरी तरह से विपदा थी/ यीशु के इन शुरू के अनुयायियों के लिए, वो कभी विश्वास नही कर सकते थे, कि वो सच में मसीहा है, यदि वहां ऐसा कुछ अद्भुत

रूप में, नही होता/ कि क्रुसिकरण के इस विपदा को पलटा दे/ और वो दावा करते हैं कि ऐसा कुछ हुआ, वो दावा करते हैं कि परमेश्वर ने यीशु नासरी को मृर्दों में से जिलाया/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, बिल, क्या आपको वो समय याद है, जब आप अविश्वासी थे, और आप नया नियम पढ़ रहे थे, और आपने अनुमान लगाया कि यीशु ने मसीहा होने का दावा किया है, यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है, और यीशु ने मनुष्य का पुत्र होने का दावा किया है, और वो मुर्दों में से जी उठा है/ और आप आमने सामने आते हैं, इस व्यक्ति के सामने जिसने ये होना का दावा किया है, ये सच्चा ऐतिहासिक व्यक्ति है, हमारे दर्शक जो देख रहे हैं, और अभी इस सवाल का सामना कर रहे हैं, आप इन्हें क्या करने की सलाह देगे?

डॉक्टर विलयम लैन क्रेग: मैं सोचता हूँ कि यीशु का मुर्दों में से जी उठना हम से चाहता है, पहले चेले के जैसे, कि अद्भुत रूप में जान ले यीशु का मसीहा होना और राज्य को, मैं सच में यीशु के दिनों के यहूदी लोगों पर दया करता हूँ, जॉन, जिन्होंने कहा कि ये प्रतिज्ञा किया गए मसीहा जैसे नही दिखता/ ये राजा जैसे नही दिखता है, जो दाऊद से आएगा और हमारे सतानेवालों को दूर करेगा, ये तो सामान्य अपराधी है/ मैं समझ नही सकता कि वो यीशु पर क्यों विश्वास नही कर पाए/ वो उनके मसीही अपेक्षा में फिट नही हुआ/

लेकिन यदि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया है, इसका अर्थ है कि परमेश्वर के राज्य के बारे में यीशु की विचारधारा, जो उसने कहा कि वो मनुष्य के इतिहास में ये अद्भुत काम है, ये तो पृथ्वी का राजनैतिक राज्य नही था, और उसका राजा होना तो पृथ्वी पर राजनैतिक राज्य नही था/ जब कि यीशु ने कहा कि परमेश्वर का राज्य तुम में है/ परमेश्वर का राज्य याने परमेश्वर तो उन लोगों के जीवन में आता है जो उस पर विश्वास करते और उसके पीछे चलते हैं/

और फिर यीशु की मृत्यु तो ऐसे दिखती है, कि इतिहास में कोई अचानक घटना हुई हो, दू:ख की घटना नही, लेकिन ऐसी बात थी जो खुद यीशु ने कही थी, वो जानता था जब वो यरूशलेम में गया, कि ये तो उसकी मृत्यु से खत्म होगा, उसने इस चुनौती को स्वीकार किया, जो उसके मारे जाने की ओर ले जानेवाली थी/ उसने ऐसा क्यों किया? ये तो केवल इसलिए कि उसने देखा कि उसकी मृत्यु, परमेश्वर के लिए बलिदान होगी, जो परमेश्वर और मनुष्य के बिच नई वाचा शुरू करेगी/ पापों की क्षमा के लिए एक जरिया, और परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में लोगों को लाएगा/

हम इसे देखते हैं चेलों के साथ अंतिम भोजन के समय में, उसने फसह की रोटी ली, और उन्हें देते हुए कहा, ये मेरी देह है जो तुम्हारे लिए है, फिर उसने दाखरस लिया और कहा, ये नई वाचा का मेरा लहू है, जो बहुतों के लिए बहाया जाता है/ इसे पियो, वो उन्हें बता रहा था कि कैसे खुद को परमेश्वर के सामने बलिदान के रूप में चढ़ाएगा, उसका जीवन, उसका शरीर और लहू, कि नई वाचा को शुरू कर सके/ परमेश्वर और मनुष्य के बीच/ याने अब यीशु की मृत्यु तो अद्भुत महत्व प्राप्त करती है/ हमारे उद्धार के स्रोत के रूप में, ये तो दू:ख की बात नही है, ये तो यीशु ने फसह के मेमने के रूप में दे दिया है, परमेश्वर को, कि हमें परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में लेकर आए, और यही तो शुरू का चर्च निरंतर दावा करते रहा, वो हमारे पापों के लिए मरा, उसने खुद हमारे पापों को उठा लिया, अपने शरीर में, उस क्रूस पर/

तो इसके लिए यीशु के मसीहा होने बारे में अद्भुत अर्थ की जरूरत है, परमेश्वर का राज्य जो अब उसका राज्य हो जाता है, हमारे दिल में जो उसके पीछे चलते हैं, जब तक वो फिर से आकर इस पृथ्वी पर फिर स्थापित न कर दे/ और उसकी मृत्यु तो अजीब सी हार नही थी, लेकिन ये तो जरिया थी कि नई वाचा परमेश्वर और मनुष्य के बिच शुरू की जाए/ पाप के लिए बलिदान करना था, जिससे हमें क्षमा मिलती है, और परमेश्वर के साथ सही संबन्ध में आते हैं, तो अब हमें बुलाया गया है तो क्या हम अपना विश्वास रखते हैं, क्या हम अपना भरोसा और विश्वास रखते हैं, यीशु पर, हमारे बलिदान के रुप में, हमारे उद्धारक के रूप में, और हमारे प्रभु के रूप में, हमारे मसीहा हमारे राजा के रूप में, ये वो चुनाव है जिसका हम सामना करते हैं/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: दोस्तों इसके बारे में सोचना बहुत महत्वपूर्ण है, और मैं आशा करता हूँ कि ये सच्चाई सीधा आपके सामने आएगी,और आप जानेगे कि आपने कभी यीशु पर विश्वास नही किया है, आपने उससे कभी अपने जीवन में आने के लिए नही कहा है, कि आपको बचाए और आपके पाप दूर करे, तो मैं कहता हूँ कि क्यों न अभी, मसीहा को आपका उद्धार होने के लिए कहिए, उसे अपने जीवन में न्योता दे/

अब अगले हफ्ते हम देखेगे कि क्या सच में कोई ऐतिहासिक सबूत है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है? और बिल इस क्षेत्र में माहिर हैं, और मैं आशा करता हूँ कि आप इस सबसे महत्वपूर्ण और दिलचस्प प्रोग्राम में जुड़ जाएगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यद ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋन्ड्ढक्ष्